साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 28 फरवरी-06 मार्च 2022, वर्ष-7, अंक-48

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

मध्यप्रदेश को रासायनिक खेती से कैसे मिलेगा छुटकारा, मंत्री, सांसद और विधायकों का जैविक खेती से किनारा

» 25 मंत्रियों का पेशा भी खेती किसानी, पर पुरानी पद्धति

» सीएम के पास 7.671 एकड़ और परिजनों के नाम पर 14 एकड़ कृषि भूमि

किसान मंत्री जनता को दे रहे 'ज्ञान' फिर भी जैविक खेती से अनजान

-सबसे अधिक कृषि भूमि मंत्री बिसाहू लाल सिंह के पास 71 एकड़ जमीन
-मध्यप्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री प्रभुराम चौधरी के पास 45 एकड़ कृषि जमीन
-नरोत्तम के पास 34 एकड़, कृषि मंत्री कमल पटेल के पास 48 एकड़

अरविंद मिश्र। भोपाल

मध्यप्रदेश जैविक खेती और इससे जुड़े उत्पादों के निर्यात में देश में अव्वल है। प्रदेश में लगातार जैविक खेती का क्षेत्र बढ़ रहा है, लेकिन रासायनिक खेती का उपयोग कम नहीं हो रहा है। इसकी एक वजह यह है कि प्रदेश के माननीयों (सांसदों, मंत्रियों, विधायकों) का जैविक खेती से कोई सरोकार नहीं है। प्रदेश सरकार के 25 मंत्रियों का पेशा भी खेती किसानी है, लेकिन उनमें से अधिकांश जैविक खेती से काफी दूर हैं। गौरतलब है कि प्रदेश में सरकार ने जैविक व प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देना तय किया है। इसके लिए मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंत्रियों को जैविक व प्राकृतिक खेती का मॉडल पेशन करने के लिए कहा है, लेकिन अधिकतर मंत्री अभी खेती के प्रयोगों से दूर हैं। मुख्यमंत्री खुद प्राकृतिक खेती करते हैं, लेकिन उनकी कैबिनेट के मंत्री परंपरागत खेती की राह पर चल रहे हैं। शिवराज अनार से लेकर आम तक उगाते हैं, लेकिन उनके मंत्री प्राकृतिक और जैविक खेती से अनजान हैं।

जैविक खेती में मप्र देश में अव्वल

मप्र जैविक खेती और इससे जुड़े उत्पादों के निर्यात में देश में अव्वल है। प्रदेश में लगातार जैविक खेती का क्षेत्र बढ़ रहा है। वर्ष 2017-18 में 11 लाख 56 हजार हेक्टेयर क्षेत्र में जैविक खेती हो रही थी। जबकि, वर्ष 2020-21 में यह क्षेत्र बढ़कर 16 लाख 37 हजार हेक्टेयर से अधिक हो गया है। कृषि और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पाद निर्यात विकास प्राधिकरण की वर्ष 2020-21 की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश से पांच लाख टन जैविक उत्पाद का निर्यात हुआ, जो ढाई हजार करोड़ रुपए से अधिक का था।

कृषि मंत्री पटेल को जैविक खेती पसंद

मप्र के कृषि मंत्री कमल पटेल को भी जैविक कृषि पसंद है। इस पर भरोसा करते हैं। कृषि मंत्री बताते हैं कि ग्राम बारंगा में स्थित उनके 10 एकड़ खेत में अरहर की जैविक फसल लगाई है। फसल में पूर्ण रूप से गोबर की जैविक खाद का उपयोग किया गया। जैविक खाद से जमीन की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी और शुद्ध फसल का उत्पादन मिलेगा।

भोपाल। यह तस्वीर दो साल पुरानी है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान विदिशा में अपने खेत में ट्रैक्टर चलाते नजर आए थे। उन्होंने करीब एक घंटे खेत में गेंहू की बोवनी की थी। वो बचपन से ही खेती कर रहे हैं।

सीएम करते हैं जैविक खेती

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और कृषि मंत्री कमल पटेल कुछ हद तक जैविक खेती करते हैं। मुख्यमंत्री की विदिशा में खाम बाबा टीला बेसनगर और छीरखेड़ा के पास खेती है। वे यहां जरबेरा के फूलों सहित प्याज, सब्जियां, अनार और कई तरह के आम का उत्पादन लेते हैं। गेहूं-चने की भी यहां खेती होती है। इनकी खेती में एक बड़ा हिस्सा जैविक खेती का है। खुद शिवराज अक्सर अपनी खेती देखने के लिए पहुंचते हैं। अपने खेत के अनार और आम आदि फलों को ये कार्टून में पैक कर मार्केटिंग के लिए भेजते हैं। जरबेरा के फूलों के लिए पॉलीहाउस एवं ग्रीन हाउस बनवा रखे हैं, फूलों का यहां बड़ी मात्रा में उत्पादन होता है जिनकी मार्केटिंग प्रदेश सहित आसपास के राज्यों के बड़े नगरों में भी होती है। सीएम की खुद की बड़ी डेयरी है, जिसके गोबर का उपयोग खाद के रूप में होता है।

मंत्री जैविक खेती की कर रहे तैयारी

सीएम के निर्देश के बाद अब जैविक खेती के लिए कुछ मंत्री तैयारी कर रहे हैं। पहले कुछ एकड़ में प्रयोग करेंगे, फिर उसके बाद आगे कदम उठाए जाएंगे। स्वास्थ्य मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी भी मुख्यत: खेती का व्यवसाय करते हैं। अभी तक उन्होंने जैविक व प्राकृतिक खेती नहीं की है। चौधरी का कहना है कि अभी तक जैविक खेती नहीं की है, लेकिन इस बार दो एकड़ में यह प्रयोग करने का विचार है। वहीं पीडब्ल्यूडी मंत्री गोपाल भार्गव, नगरीय प्रशासन मंत्री भूपेंद्र सिंह, राजस्व मंत्री गोविंद सिंह राजपूत और अन्य कई मंत्री परंपरागत खेती ही करते हैं। लेकिन अब जैविक खेती की तैयारी कर रहे हैं। कुछ ऐसे भी मंत्री हैं, जिन्होंने रिकॉर्ड पर खुद को किसान बताया है, लेकिन खेती से दूर ही रहते हैं। इनमें स्कूल शिक्षा मंत्री इंदर सिंह परमार शामिल हैं। इंदर की सीधे तौर पर कोई खेती नहीं है।

प्रधानमंत्री ने दिखाया मार्ग

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्राकृतिक खेती को जनआंदोलन बनाने की बात कही है। ऐसे में मप्र सरकार भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए आगे बढ़ रही है। यही कारण है कि खेती करने वाले मंत्रियों को जैविक खेती के लिए कहा गया है।

25 मंत्री करते हैं खेती-किसानी

मंत्री	जमीन एकड़ में
बिसाहूलाल सिंह	71
विजय शाह	70
बृजेंद्र सिंह यादव	68
कमल पटेल	48
प्रेम सिंह पटेल	46
प्रभुराम चौधरी	45
डॉ. नरोत्तम मिश्रा	34
डॉ. मोहन यादव	31
बृजेंद्र प्रताप सिंह	31
इंदर सिंह परमार	29
गोपाल भार्गव	29
राजवर्धन सिंह	26
मीना सिंह	23
रामकिशोर कावरे	21
ओमप्रकाश सकलेचा	20
गोविंद सिंह राजपूत	18
सुरेश धाकड़	17
भूपेंद्र सिंह	16
भारत सिंह कुशवाह	15
तुलसी सिलावट	12
रामखेलावन पटेल	06
महेंद्र सिंह सिसोदिया	05
ओपीएस भदौरिया	03
हरदीप सिंह डंग	02
प्रद्युमन सिंह तोमर	0.864

प्रदेश में वेटरनरी विभाग की मुहिम लाई रंग

किसान पशु क्रेडिट कार्ड बनाने में मप्र नम्बर-1

भोपाल। पशुपालकों को कृषि यानि किसानों की तर्ज पर किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) बनाए जाने के मामले में मध्यप्रदेश देश में नंबर-1 पर है। 15 नवम्बर 2021 से 15 फरवरी 2022 के बीच प्रदेश में वेटरनरी विभाग द्वारा चलाई गई केसीसी बनाने की मुहिम उस वक्त रंग लाई जब बैंकों के सामने आए एक लाख 65 हजार से ज्यादा आवेदनों की स्क्रीनिंग के बाद 54 हजार से ज्यादा एप्लीकेशन को केसीसी कार्ड बनाने के लिए अंतिम रूप से स्वीकृति दे दी गई। पशुपालकों को विपरीत परिस्थितियों में आर्थिक रूप से मदद पहुंचाने के लिए बनाई केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना में मध्य प्रदेश ने देश के दूसरे राज्यों को पछाड़ते हुए नंबर-1 पर अपना स्थाना बना लिया है।

तीन माह में बैंक को वापस करना होती है राशि

किसान क्रेडिट कार्ड के तहत गौ-पालक गाय के लिए 5 हजार रुपए की राशि प्रति माह अपने पशुपालन के लिए ले सकता है। वहीं भैंस पालक को इसके लिए 6 हजार रुपए की राशि स्वीकृत की जाती है। नियम अनुसार इस राशि को पशुपालक को तीन माह के बाद वापस देना होता है।

राज्य	प्राप्त आवेदन	स्वीकृत
मध्य प्रदेश	1,70,069	54, 254
तमिलनाडू	1,12, 737	47,481
गुजरात	1,62,774	46,677
उत्तर प्रदेश	1,07,207	33,675
बिहार	88,237	22,482

प्रदेश में सरकार की इस योजना के तहत विभाग द्वारा बैंकों के साथ मिलकर कैंप लगाए गए थे। इनमें अंतिम रूप से 54 हजार 254 आवेदनों को केसीसी के लिए स्वीकृत कर दिया गया है। सभी विभागीय अधिकारियों को निर्देशित भी किया गया है कि योजना के तहत लाभांवित होने वाले पशुपालकों को किसी भी समस्या का सामना न करना पड़े।

डॉ. आरके मेहिया, डायरेक्टर, पशुपालन एवं विभाग, मप्र

गेहूं खरीदी में बिचौलियों को 'निपटाएगा' दतिया मॉडल

भोपाल। समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीदी के लिए पंजीयन चल रहा है। इस बार प्रशासन की कोशिश है कि वास्तविक किसान ने जितने रकबा में बोवनी की है उतने के अनुपात में ही वह गेहूं की बिक्री कर सके। गेहूं खरीदी में बिचौलियों को अलग करने के लिए यह प्रक्रिया अपनाई जा रही है। बताया जा रहा है कि इस तरह के प्रयोग दतिया में हुआ है और वह सफल रहा है। इस कारण दतिया मॉडल अब प्रदेशभर में लागू किया जा रहा है। समर्थन मूल्य पर गेहूं के दतिया मॉडल के तहत पंजीयन के बाद वास्तविक रकबा का वेरीफिकेशन तहसीलदार और पटवारी सहित राजस्व विभाग के अन्य अधिकारियों द्वारा किया जाएगा। इसमें देखा जाएगा कि जितने में बोवनी हुई है उतने के अनुपात में ही पंजीयन के दौरान बिक्री क्षमता तय किया जाए।

प्रदेश में होगा लागू

प्रमुख सचिव मध्यप्रदेश शासन खाद्य नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण द्वारा दतिया मॉडल को सम्पूर्ण प्रदेश में लागू किए जाने के निर्देश दिए गए हैं। इस संबंध में जिले के समस्त अनुविभागीय अधिकारी राजस्व, तहसीलदार, सचिव कृषि उपज मंडी कटनी तथा सहायक आयुक्त सहकारिता को निर्देशित किया गया है कि दतिया मॉडल की कार्ययोजना में सौंपे गए दायित्वों का समय सीमा में अनुपालन सुनिश्चित करें।

दोनों किनारों पर प्राकृतिक खेती कराए जाने की तैयारी, प्रदेश के 14 जिले सरकार की योजना में होंगे शामिल

नर्मदा किनारे प्राकृतिक खेती से खुलेगा आत्मनिर्भरता का मार्ग

भोपाल। विशेष संवाददाता

गंगा नदी की तर्ज पर प्रदेश में नर्मदा के दोनों किनारों पर प्राकृतिक खेती कराए जाने की तैयारी है। इसके लिए कृषि विभाग का अमला जी-तोड़ मेहनत कर रहा है। डीपीआर तैयार कर राज्य शासन को भेज दी गई है। उस पर सरकार विचार कर अगले चरण की कार्रवाई का निर्णय लेगी। संभव है कि आगामी बजट में इसके लिए शासन राशि का प्रावधान कर दे। बड़ी नदियों के दोनों किनारों पर बढ़ती बसाहट और तेजी से कटते जंगल पर्यावरण के लिहाज से बड़ा संकट बनकर सामने आए आए हैं। इनकी वजह से जहां नदियों में मिट्टी के कटाव की समस्या बढ़ी है। वहीं इनमें बढ़ते प्रदूषण ने जल-जीवन को पर भी बुरा असर डाला है। केंद्र सरकार की ओर से गंगा नदी के दोनों किनारों पर प्राकृतिक खेती के लिए योजना बनाई गई है। इसी तर्ज पर कृषि विभाग के अफसर नर्मदा के किनारे-किनारे भी नवाचार की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। कृषि विभाग के संयुक्त संचालक की ओर से इसके लिए एक डीपीआर तैयार की गई है। जिसे राज्य शासन को भेजा जा चुका है। नर्मदा नदी की कुल लंबाई 1312 किमी है जिसमें से 1077 किमी वह मप्र में ही बहती है। प्रदेश के अनूपपुर, डिंडोरी, मंडला, जबलपुर, नरसिंहपुर, होशंगाबाद, हरदा, देवास, खंडवा, खरगोन, बड़वानी, धार, अलीराजपुर, झाबुआ आदि इस योजना में शामिल होंगे।

परंपरागत खेती पर फोकस

सरकार और कृषि विभाग की तैयारी है कि वो नर्मदा के दोनों किनारों पर पांच-पांच किमी के दायरे में प्राकृतिक और गैर परंपरागत खेती को बढ़ावा देंगे। लोगों को बागवानी के लिए, फलदार पौधों का रोपण करने, और पशुपालन के लिए प्रेरित करेंगे। इसी तरह से नर्मदा तट पर मसाला उद्योग लगाने की सलाह भी किसानों को दी जाएगी। डीपीआर में प्रस्तावित है कि नर्मदा तट पर बांस की खेती कर बांस से जुड़े कुटीर उद्योगों को बढ़ावा दिया जा सकता है। बांस मिट्टी के कटाव को रोकने में बड़ी भूमिका निभा सकते हैं।

किसानों को होगा फायदा

नर्मदा तटों पर बड़े फलदार, मसालों के या फिर फूलों के पेड़ लगाए जाने से नर्मदा नदी के किनारे मिट्टी का कटाव थमेगा। परंपरागत खेती नहीं होने से मिट्टी को को उर्वर करने में मदद मिलेगी। तटों पर जहां-जहां गौवंश का पालन किया जाएगा, वहां-वहां गोबर और गौमूत्र से भूमि में औषधीय तत्वों की मात्रा बढ़ेगी। गोबर से जैविक खाद का भी निर्माण हो सकेगा।

जैविक से अलग प्राकृतिक खेती

जैविक खेती और प्राकृतिक खेती दो अलग-अलग पद्धति है। जैविक खेती में जैविक संसाधन (गोबर की खाद, केंचुआ, जैव उर्वरक आदि) का उपयोग किया जाता है। साथ ही, ध्यान रखा जाता है कि अन्य दूसरे खेत का रसायन पानी के साथ, हवा के साथ, जानवरों के साथ या अन्य किसी भी प्रकार से ना आए। वैज्ञानिक रूप से फसल उत्पादन के साथ-साथ खेत के आसपास का वातावरण, मिट्टी के स्वास्थ्य, पानी की शुद्धता जैसी चीजों को ध्यान में रखकर होने वाला उत्पादन जैविक श्रेणी में आता है। जैविक खेती पर कई अनुसंधान हो चुके हैं।

प्राकृतिक खेती कृषि की पुरातन पद्धति

प्राकृतिक खेती कृषि की पुरातन पद्धति है। यह कई तरीकों से की जाती रही है। कई साल पहले होमा खेती का प्रचलन था। इसमें एक निश्चित समय में खेत में हवन, मंत्रोच्चार से पवित्र कर खेती की जाती है। इसके अलावा, ब्रह्मांडीय शक्तियों सूर्य, चांद आदि की ऊर्जा का ध्यान रखा जाता है। प्राकृतिक खेती को इस तरह से देखा जाता है कि खेत में फसल की बुवाई करो और काटो। न उर्वरक का उपयोग करें, न ही रसायन का उपयोग करें। फसल की शुद्धता और मिट्टी के स्वास्थ्य की दृष्टि से इसे बढ़ावा दिया जा रहा है।

जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग

वर्तमान में महाराष्ट्र के कृषि विशेषज्ञ पद्मश्री सुभाष पालेकर की थ्योरी पर आधारित प्राकृतिक खेती की बात हो रही है। पालेकर की पद्धति को पहले जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग कहा गया। अब इसे लो इनपुट नेचुरल फार्मिंग नाम से भी जाना जा रहा है। फसल के अच्छे उत्पादन और मिट्टी के स्वास्थ्य को बरकरार रखने के लिए पालेकर ने चार सिद्धांत बताए। इस आधार पर कहा गया कि फसल का उत्पादन चार-पांच साल में लगभग रासायनिक खेती के बराबर मिल सकता है। साथ ही, मिट्टी की उर्वरा शक्ति के साथ उसके स्वास्थ्य भी अच्छा रखा सकता है, लेकिन इस पर अनुसंधान नहीं हुए हैं।

प्रारंभिक अवस्था प्राकृतिक खेती

प्राकृतिक खेती मध्यप्रदेश में प्रारंभिक अवस्था में है। सिर्फ वही प्रोग्रेसिव किसान कर रहे होंगे, जो पालेकर के सीधे में संपर्क में हैं। वह अभी चिन्हित नहीं हो सके हैं। इसके अलावा दूरस्थ क्षेत्र के ऐसे आदिवासी किसान जो अभी तक रासायनिक खेती से परिचित नहीं है, वही प्राकृतिक खेती करते हैं। यह मप्र के अलावा अन्य राज्यों में भी मिल सकते हैं।

थ्योरी के चार सिद्धांत

अंतरवर्तीय फसल: किसी भी एक फसल के साथ दूसरी फसल को भी उगाया जाता है। अंतरवर्तीय यानी एक फसल, दूसरी फसल को कम से कम प्रभावित करे। जैसे- अरहर में सोयाबीन, गेहूं के साथ सरसों की फसल लगाई जाती है।

बायोडायनैमिक प्रोडक्ट: पौध-पोषण के हिसाब से घनजीवामृत, जीवामृत, बीज उपचार के लिए बीजामृत, कीट नियंत्रण के लिए ब्रह्मास्त्र, अग्नेयस्त्र व दसपर्णी अर्क जैसी चीजें उपयोग में लाई जाती हैं। यह सभी पेड़-पौधों के प्रोडक्ट हैं।

मल्चिंग: खरपतवार की रोकथाम के लिए मल्चिंग करने की व्यवस्था दी। इसमें फसलों का बचा हुआ भूसा आदि को अगली फसल के लिए खेत में कतारों के बीच में बिछाया जाए। जिससे खरपतवार का अंकुरण कम से कम से हो पाता है।

सिंचाई व्यवस्था: यदि फसल कतारों में है, तो एक कतार छोड़कर पानी दिया जाए। बड़े पौधे हैं या वृक्ष हैं तो उनमें पौधे या वृक्ष की छाया का जितना घेरा बनता है, उस जगह को छोड़कर दूर से पानी दिया जाए। जिससे अंदर ही अंदर पौधे का पानी मिल जाएगा।

मिल रहा 15 टन उत्पादन प्रति एकड़, 15 से 17 लाख रुपए की हो रही आमदनी

सिवनी के किसान ने 10 एकड़ में लगाई आलू की फसल

मनीष तिवारी। सिवनी

जिले के किसान विविधता के आधार पर फसलों का उत्पादन लेने की ओर अग्रसर हो रहे हैं। जिले में जहां कुछ किसान परम्परागत रूप से चली आ रही फसलों जैसे धान, मक्का, गेहूं की खेती तक सीमित है। वहीं जिला कलेक्टर और उपसंचालक कृषि सिवनी के मार्गदर्शन में कुछ किसान पुरानी परम्परागत फसलों को छोड़कर नकदी फसलों का उत्पादन ले रहे हैं। जिससे उन्हें बाजार से अच्छा दाम मिलने से बेहतर आय प्राप्त हो रही है। ऐसे ही सिवनी जिले के कृषक प्रहलाद ठाकुर है। जिन्होंने खेती में अपनी अलग राह चुनी है। ग्राम ढेंका, विकासखंड सिवनी में इनकी खेती है। यह बताते हैं कि उनके पास परिवार की जमीन के साथ लगभग 12 हेक्टेयर खेती का रकबा है। जिसमें से 10 एकड़ खेत में उन्होंने परम्परागत फसल के स्थान पर इस वर्ष आलू की फसल ली है।

ड्रीप विधि से सिंचाई

आलू की किस्म एफसी-5 जो कि व्यापारिक उद्देश्य से एक उन्नत किस्म है। जिसकी बोनी कृषक द्वारा 10 नवम्बर 2022 को की गयी है। इन्होंने पेप्सिको कंपनी से संपर्क कर 120 क्विंटल आलू का बीज प्राप्त किया है। जिसमें ड्रीप विधि से सिंचाई कार्य किया जाता है। जिससे सिंचाई जल का संयमित उपयोग होता है। आलू की इस उन्नत खेती में उन्हें एक एकड़ पर लगभग 70 हजार की लागत आयी है। जिससे प्रति एकड़ 10 से 15 टन आलू प्राप्त होने की संभावना है। साथ ही उन्हें संपूर्ण लागत घटाकर 11.70 रुपए प्रति किग्रा मुनाफा होगा। इस आधार पर कृषक 15 टन उत्पादन प्रति एकड़ प्राप्त करते है तो उन्हें 15 से 17 लाख की आमदनी 10 एकड़ में आलू उत्पादन से होनी है।

पेप्सिको कंपनी को सप्लाई करते हैं फसल

कृषक ने आगे बताया कि उन्हें अपनी उपज बेचने के लिए बाजार पर निर्भर नहीं रहना पड़ता है, बल्कि वे अपनी उपज सीधे पेप्सिको कंपनी को सप्लाई करने वाले है। उनकी इस नई राह को देखते हुए जिले के अन्य 49 किसान भी 140 एकड़ में आलू उत्पादन का कार्यक्रम ले रहे हैं। जो कि आने वाले समय में फसल विविधकरण के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

जबलपुर डेयरी स्टेट का लोकार्पण, दस हजार गौवंश की होगी क्षमता

बेसहारा गायों के कोख से तैयार कर ली अच्छी नस्ल की बछिया

जबलपुर में वैज्ञानिकों ने बढ़ाया दुधारू गायों का कुनबा

50 एकड़ में 70 प्लाट के साथ खम्हरिया डेयरी स्टेट परियोजना शुरू

जबलपुर। संवाददता

सड़कों पर घूमती बेसहारा गायों के बारे में मध्यप्रदेश की सरकार गंभीरता से सोच रही है। उनकी इस सोच में नानाजी देशमुख पशुचिकित्सक विश्वविद्यालय में चल रहे अनुसंधान महत्वपूर्ण है। विवि द्वारा बेसहारा गायों की कोख में भ्रूण प्रत्यारोपण कर ज्यादा दूध देने वाली गायों की नस्ल तैयार करने का अच्छा काम किया है। यह बात विवि में पशुपालकों के प्रशिक्षक कार्यक्रम पशु वैज्ञानिकों ने कही। विवि के कुलपति प्रो.एसपी तिवारी और आला अधिकारियों के साथ अधारताल स्थित विवि परिसर का निरीक्षण किया। यहां पर डेयरी फार्म से लेकर मुर्गी फार्म के निरीक्षण के दौरान यहां चल रहे अनुसंधान की जानकारी ली और सराहना की।

वेटरनरी विवि के कुलपति प्रो. एसपी तिवारी ने बताया कि किस तरह से विवि के डेयरी फार्म बेसहारा गायों की कोख में बेहतर नस्ल की गाय के बच्चे तैयार किए हैं। इन गायों की कोख में तैयार हुई बछियों को भी देखा। इस दौरान पशुपालन मंत्री ने यहां बनाए गए तीन करोड़ 60 लाख रुपए की लागत से किसान हास्टल का लोकार्पण किया। इसके बाद उन्होंने विवि द्वारा किए जा रहे अनुसंधान कार्यों की समीक्षा की। वहीं पशुपालकों को बकरी, मुर्गी और

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कर रहा समीक्षा

पशुपालन विभाग के वैज्ञानिकों ने लगातार अनुसंधान करने के बाद पशुओं में भ्रूण प्रत्यारोपण किया। गाय पर लगातार नजर रखने के बाद अनुसंधान चलता रहा। कुछ दिन बाद इनके बेहतर परिणाम सामने आए और उन्होंने बछिया को जन्म दिया। यह गाय वर्तमान में पूरी तरह स्वस्थ हैं और अच्छी नस्ल की है। यह अनुसंधान विश्वविद्यालय का प्रदेश के अन्य संस्थानों और अन्य राज्यों के संस्थानों में शुरू कर दिया गया है। विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे इस कार्य की समीक्षा लगातार भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद कर रहा है। विवि का कहना है कि अनुसंधान लगातार आगे भी चलता रहेगा।

प्रदेश का पहला डेयरी स्टेट विकसित

हाल ही में जबलपुर में प्रदेश का पहला डेयरी स्टेट विकसित किया गया है। 50 एकड़ में फैले परिसर में 70 प्लाट डेयरी संचालकों को मिलेगा। जिसका लोकार्पण पशुपालन मंत्री प्रेम सिंह पटेल की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान मप्र गौसंवर्धन बोड़ के अध्यक्ष स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरी भी मौजूद थे। गौरतलब है इस परिसर में 10 हजार पशु रखे जा सकते हैं। डेयरी से निकलने वाली गोबर से यहां बिजली बनाने का प्लांट भी स्थापित हो रहा है। 50 पैसे प्रति वर्गफीट और 40 हजार धरोहर राशि लेकर 10 वर्षों तक प्लाट आवंटित होगा। शहर से 25 किमी दूर नीमखेड़ा के पास खम्हरिया में ये डेयरी स्टेट विकसित किया गया है। 2010-11 में इसी परियोजना के लिए नगर निगम ने 125 करोड़ की राशि मांगी थी। मप्र राज्य पशुधन और कुक्कुट विकास निगम ने इसे 10 करोड़ में तैयार किया है। परिसर में 200 घन मीटर क्षमता का गोबर गैस प्लांट भी बनाया गया है।

गायों की मौत रोकना असंभव

कोई भी गाय सड़क पर न घूमे, इसलिए हमने प्रदेशभर में गौशालाएं बनाई हैं। इनकी देखरेख से लेकर गौशालाओं को बेहतर संचालन करने का काम लगातार हो रहा है। इसके लिए विभाग पूरी तरह से निगरानी रखकर काम कर रहा है। दूध न देने वाली गाय की सुरक्षा और संरक्षा के लिए कदम उठाने के लिए जल्द ही गोबर खरीदने की योजना है। इसके लागू होने के बाद लोग उन्हें सड़क पर नहीं छोड़ेंगे। गाय की मौतों को रोकना संभव नहीं है, लेकिन उनकी मृत्यु दर को कम करने के लिए बेहतर प्रयास हो रहे हैं।

प्रम सिंह पटेल, पशुपालन एवं डेयरी मंत्री

निराश्रित गाय सड़कों पर नहीं मिलेंगी

पशुधन के माध्यम से उद्यमी को जोड़कर विकास के एक नए आयाम स्थापित करने क बहुआयामी अभियान है। मध्यप्रदेश गौवंश आधारित उद्योगों के माध्यम से आर्थिक समृद्धि ला सकती है। इसलिए पालन व संवर्धन की दिशा में सामूहिक प्रयास हों और जब ऐसे प्रयास होंगे तब बेसहारा और निराश्रित गौवंश सड़कों पर नहीं मिलेंगे। जहां गाय के माध्यम से आर्थिक गतिविधियां चलेंगी। और प्रदेश की समृद्धि में एक नया मिसाल स्थापित होगा। अतः उन्होंने कहा कि गौवंश की रक्षा करना हम सब की जिम्मेदारी है।

स्वामी अखिलेश्वरानंद गिरी, अध्यक्ष, गौसंवर्धन बोर्ड

भोपाल भी कम नहीं | इधर, राजधानी भोपाल में भी गायों के नस्ल सुधार में अच्छा काम हो रहा है। केरवा स्थित मदर बुल फार्म पर शुरू किए गए गायों के भ्रूण प्रत्यारोपण के अच्छे परिणाम मिल रहे हैं। यहां गिर नस्ल की गाय और सांड से शुरू किए गए एक प्रोजेक्ट के जरिए सेरोगेसी से जन्मी 298 गाय मौजूद हैं। अच्छी नस्लों वाली गायों के भ्रूण प्रत्यारोपण के लिए अनुपयोगी देशी गायों की कोख का इस्तेमाल हो रहा है। इसका रिजल्ट यह है कि सिर्फ 2 लीटर दूध देने वाली गाय में प्रत्यारोपित भ्रूण से जन्मी बछिया 20 लीटर प्रतिदिन तक दूध दे रही है।

किराए पर अब मिलेंगे ड्रोन

-उड़ाने का भी किसानों को दिया जाएगा प्रशिक्षण

-कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय ने तैयार किया प्रारूप

भोपाल। खेतों में तरल खाद या कीटनाशक का छिड़काव करने के लिए अब किसानों को स्प्रे पंप या श्रमिकों की तलाश में भटकना नहीं होगा। इस काम को सरल बनाने के लिए उन्हें किराए पर गांवों में ही ड्रोन किराए पर मिल जाएंगे। इसके लिए मध्य प्रदेश सरकार कस्टम हायरिंग सेंटर का विस्तार करने जा रही है, जिसकी घोषणा बजट में की जा सकती है। कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय ने योजना का प्रारूप तैयार कर लिया है। इसमें ड्रोन उड़ाने के लिए कौशल विकास केंद्रों से स्थानीय युवाओं को प्रशिक्षण भी दिलाया जाएगा, जो नि:शुल्क होगा। केंद्र सरकार ने किसानों की सहूलियत के लिए कृषि कार्यों में यंत्रीकरण को बढ़ावा देने का निर्णय लिया है। बजट में ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए प्रावधान भी किया है। इसे देखते हुए प्रदेश सरकार ने भी कस्टम हायरिंग सेंटर के माध्यम से किसानों को नैनो यूरिया खाद के साथ कीटनाशक के छिड़काव के लिए ड्रोन किराए पर उपलब्ध कराने की कार्ययोजना बनाई है। प्रदेश में अभी तीन हजार 150 कस्टम हायरिंग सेंटर हैं। इनके माध्यम से किसानों को खेत तैयार करने, बोवनी और कटाई के लिए उपकरण किराए पर मिलते हैं।

नुदान भी दिलाया जाएगा

अब इसमें ड्रोन सेवा को भी शामिल किया जा रहा है। इसके लिए ड्रोन सेवा का संचालन करने के इच्छुक केंद्रों के प्रस्ताव लेकर बैंकों को ऋण स्वीकृति के लिए भेजे जाएंगे। साथ ही अनुदान भी दिलाया जाएगा। ड्रोन डीजीसीए (नागर विमानन महानिदेशालय) से मान्यता प्राप्त संस्था से ही लिए जाएंगे। इसके लिए अनुबंध किया जाएगा।

इंदौर में खुलेगा कौशल विकास केंद्र

कृषि अभियांत्रिकी संचालनालय इंदौर में कौशल विकास केंद्र खोलने जा रहा है। अभी भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, सागर और सतना में कौशल विकास केंद्र हैं। यहां ट्रैक्टर और हार्वेस्टर चलाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इन केंद्रों में ड्रोन उड़ाने का प्रशिक्षण भी दिलवाया जाएगा। इसके लिए विभिन्न कंपनियों से संपर्क किया जा रहा है।

खेती में तरल खाद का उपयोग बढ़ रहा है। कीटनाशक की जरूरत भी अधिकांश फसलों में पड़ने लगी है। ड्रोन से यह काम बहुत आसान हो जाएगा और समय भी बचेगा। हमारे कस्टम हायरिंग सेंटर बेहतर काम कर रहे हैं। मुख्यमंत्री और कृषि मंत्री की मंशा के अनुरूप इनके माध्यम से ही ड्रोन की सेवा भी उपलब्ध कराई जाएगी। ड्रोन लेने पर अधिकतम चार लाख का अनुदान मिलेगा। स्थानीय युवाओं का चयन करके उन्हें प्रशिक्षण दिलाया जाएगा।

राजीव चौधरी, संचालक, कृषि अभियांत्रिकी

पूसा कृषि विज्ञान मेला नौ मार्च से होगा शुरू, प्रगतिशील किसानों को भी आवंटित किए जाएंगे स्टाल

मेले की थीम होगी तकनीकी ज्ञान से आत्मनिर्भर किसान

भोपाल/नई दिल्ली। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा लगाया जाने वाला पूसा कृषि विज्ञान मेला 9 से 11 मार्च तक पूसा मेला ग्राउंड, नई दिल्ली में आयोजित होगा। इस वर्ष मेले की थीम तकनीकी ज्ञान से आत्मनिर्भर किसान है। इस थीम के तहत किसानों को उन आधुनिक तौर तरीकों के बारे में जानकारी दी जाएगी, जिसे वे अपनाकर आत्मनिर्भर हो सकेंगे। इनमें स्मार्ट खेती मॉडल, संरक्षित खेती, हाइड्रोपोनिक, एरोपोनिक, वर्टीकल खेती से लेकर कृषि स्टार्टअप, किसान उत्पादक संगठन, प्राकृतिक व जैविक खेती से लेकर कृषि निर्यात सहित अनेक आकर्षण होंगे। इस मेले में उन्नत बीजों की बिक्री, जीवंत फसल प्रदर्शन, अवं उच्च कृषि तकनीकों की जानकारी किसानों को मिलेगी। यह मेला हर साल आयोजित किया जाता है और किसानों के बीच बहुत लोकप्रिय है। किसान नवीनतम जारी की गई फसल की किस्मों को खरीद सकते हैं और खेत में फसल का प्रदर्शन भी देख सकते हैं। मेले में भारतीय कृषि

अनुसंधान संस्थान, बल्कि राज्य कृषि विवि, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों व एनजीओ के स्टाल शामिल होंगे। मेले में किसानों की आय को दोगुना करने के लिए विशेष तकनीक की जानकारी दी जाएगी। मेले में मिट्टी और पानी की मुफ्त जांच का लाभ भी किसान उठा पाएंगे। तमाम स्टाल में कुछ स्टाल प्रगतिशील किसानों को आवंटित किए जाएंगे, जिनमें वे अपने उत्पादों की बिक्री कर सकेंगे।

खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के हैं कई खतरे

वैज्ञानिकों ने खेती में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के नए खतरों के बारे में विश्लेषण किया है। जिसमें चेतावनी दी गई है कि कृषि में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के भविष्य के उपयोग से खेतों, किसानों और खाद्य सुरक्षा के लिए काफी बड़े खतरे होने के आसार हैं। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के डॉ आसिफ तजाचोर ने कहा खेतों में काम करने वाली बुद्धिमान मशीनों का विचार विज्ञान की एक कथा नहीं है। बड़ी-बड़ी कंपनियां पहले से ही अपने आप चलने वाली और निणज्य लेने वाली प्रणालियों की अगली पीढ़ी के उपयोग पर विचार कर रही हैं, जो मनुष्यों के बदले काम करेंगी।

एआई के खतरे को समझने के लिए मान लीजिए एक ऐसे गेहूं के खेत की कल्पना कीजिए जो काफी बड़ा और दूर तक फैला है। जिसके आटे से शहर के लोगों को खाने के लिए रोटी बनाई जाएगी। कल्पना कीजिए कि इस क्षेत्र की जुताई, रोपाई, खाद, निगरानी और कटाई के सभी अधिकार आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के हवाले कर दिया जाए।

इसके एल्गोरिदम जो ड्रिप-सिंचाई प्रणाली, खुद चलने वाले ट्रैक्टर और कंबाइन हावेज्स्टर को निर्यत्रित करते हैं। यह फसल की जरूरतों के मुताबिक मौसम और सटीक जरूरतों के हिसाब से काम कर सकता हैं। फिर यह कल्पना कीजिए कि एक हैकर इन सभी चीजों को गड़बड़ा दे तो क्या होगा? उन्होंने कहा लेकिन अभी तक किसी ने यह सवाल नहीं पूछा है कि 'क्या कृषि में एआई या कृत्रिम बुद्धिमत्ता के तेजी से हो रहे उपयोग से जुड़े कोई खतरे भी हैं?'

फसल प्रबंधन और कृषि उत्पादकता में सुधार के लिए एआई के बहुत बड़े वादे के बावजूद, इससे होने वाले खतरों को जिम्मेदारी से हल किया जाना चाहिए। नई तकनीकों को प्रयोगात्मक व्यवस्था में ठीक से परीक्षण किया जाना चाहिए ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे सुरक्षित हैं। यह आकस्मिक विफ्लताओं, अनपेक्षित परिणामों और साइबर हमलों के खिलाफ सुरक्षित हों।

शोध में अध्ययनकर्ता खतरों की एक सूची लेकर सामने आए हैं, जिन्हें कृषि में एआई के जिम्मेदार विकास और उन्हें सही से लागू करने के तरीकों पर विचार किया जाना चाहिए। इसमें वे साइबर-हमलावरों के बारे में सचेत करते हैं जो एआई का उपयोग करके व्यावसायिक खेती में व्यवधान पैदा कर सकते हैं। आंकड़ों में गड़बड़ी कर खेत में जहर फैला सकते हैं, अपने आप चलने वाले ड्रोन और रोबोट हावेज्स्टर को बंद कर सकते हैं। इससे बचाव के लिए सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि 'व्हाइट हैट हैकसज़' कंपनियों को विकास के चरण के दौरान किसी भी सुरक्षा विफ्लता को उजागर करने में मदद करते हैं, ताकि प्रणाली को वास्तविक हैकसज़ से सुरक्षित किया जा सके।

आकस्मिक विफ्लता से जुड़े एक परिदृश्य में,

अध्ययनकर्ताओं का सुझाव है कि केवल छोटी अवधि में सबसे अच्छे फसल उपज देने के लिए प्रोग्राम की गई एआई प्रणाली इसे हासिल करने के पर्यावरणीय खतरों को अनदेखा कर सकता है। जिससे उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग और लंबी अवधि में मिट्टी का क्षरण हो सकता है। उच्च पैदावार की खोज में कीटनाशकों का अधिक उपयोग पारिस्थितिकी तंत्र में जहर फैला सकता है। नाइट्रोजन उर्वरकों का अधिक उपयोग मिट्टी और आसपास के जलमार्गों को प्रदूषित करेगा। अध्ययनकर्ताओं का सुझाव है कि इन परिदृश्यों से बचने के लिए तकनीकी डिजाइन प्रक्रिया में लागू पारिस्थितिकीविदों को शामिल किया जाना चाहिए। अपने आप चलने वाली मशीनें किसानों के काम करने की स्थिति में सुधार कर सकती हैं, उन्हें शारीरिक श्रम से राहत मिल सकती है। लेकिन समावेशी तकनीकी डिजाइन के बिना, सामाजिक-आर्थिक असमानताएं जो वर्तमान में वैश्विक कृषि में शामिल है। जिसमें लिंग, वगज़ और जातीय भेदभाव शामिल हैं जो इसके चलते बनी रहेगी। तजाचोर ने चेतावनी देते हुए कहा कि विशेषज्ञ एआई खेती प्रणाली जिसमें मजदूरों के श्रम की जटिलताओं पर विचार नहीं किया जाता है। इसमें वंचित समुदायों के शोषण की अनदेखी हो सकती है तथा इसके लगातार बने रहने के आसार हैं। विभिन्न उन्नत मशीनरी, जैसे कि ड्रोन और सेंसर, पहले से ही फसलों के बारे में जानकारी इकट्ठा करने और किसानों के निणज्य लेने में सहायता करने के लिए उपयोग किए जाते हैं। उदाहरण के लिए बीमारियों या सिंचाई में कमी का पता लगाना। खुद चलने वाले कंबाइन हार्वेस्टर जिसे इंसान के बिना चलाए फसल का काम कर सकते हैं। इस तरह की स्वचालित प्रणालियों का उद्देश्य खेती को अधिक कुशल बनाना, श्रम लागत को बचाना, उत्पादन के लिए अनुकूल बनाना और नुकसान और बबादज़ी को कम करना है। इससे किसानों के लिए राजस्व में वृद्धि के साथ-साथ कृषि एआई पर अधिक निर्भरता होती है। हालांकि छोटे पैमाने के उत्पादक जो दुनिया भर में अधिकांशत: खेती करते हैं और तथाकथित ग्लोबल साउथ के बड़े हिस्से के लिए भोजन पैदा करते हैं, उन्हें एआई-संबंधित फायदों से बाहर रखा जा सकता है।

भुवनेश्वर त्रिपाठी

वर्मीवाश अपनाइए मृदा के साथ फसलों को स्वस्थ बनाइए

आशुतोष मिश्रा
कृषि संकाय, महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विवि, चित्रकूट, सतना

भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश है। परन्तु सन 60 के दशक के पूर्व हमारा देश खाद्यान्न उत्पादन में अधिक पिछड़ा हुआ था और दूसरे देशों के ऊपर निर्भर रहना पड़ता था, लेकिन 1966-67 के दौरान हरित क्रांति के माध्यम से हमारे देश के कृषि वैज्ञानिको एवं किसानों के अथक प्रयास से खाद्यान्न उत्पादन में हमारा देश आत्मनिर्भर हुआ। लेकिन अधिक उपज प्राप्त करने के लिए हमारे किसान भाई अंधाधुंध, रासायनिक उर्वरकों, रासायनिक कीटनाशक एवं रासायनिक खरपतवार नाशक पदार्थो को प्रयोग किया। जिससे नि:संदेह हमारी मिट्टी की भौतिक, जैविक, रासायनिक एवं उर्वरता गुणों का ह्रास हुआ एवं रासायनों के अधिक प्रयोग से अनाजों की गुणवत्ता में गिरावट, खाद पदार्थों में रासायनिक पदार्थों के कारण खाद्यान्न पदार्थों में जहरीलापन होना एवं साथ ही साथ पर्यावरण भी प्रदूषित हो रहा है।

रासायनिक उर्वरक के उपयोग के कारण जल, जन, जमीन, जंगल एवं जानवर सभी प्रभावित हो रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में उपरोक्त समस्यायों के निदान के लिए रासायनिक उत्पादों का प्रयोग कम से कम करके उनके स्थान पर जैविक पदार्थों जैसे खाद, कम्पोस्ट, बर्मी कम्पोस्ट एवं वर्मीवाश का प्रयोग करके जन, जल, जमीन, जंगल एवं जानवर को स्वस्थ बनाए जा सकते हैं। वर्मीवाश एक उत्तम तरल जैविक खाद है। वर्मीवाश एक ड्रम या मिट्टी के बड़े बर्तन में ताजा वर्मी कम्पोस्ट एवं केंचुए की अधिकतम संख्या को डालकर उसके उपर फुहारे के रूप में पानी का प्रयोग करते हैं। जो वर्मी कम्पोस्ट एवं केंचुओं का शरीर तरल पदार्थ से भरा होता है एवं इनके शरीर से लगातार इनका उत्सर्जन होता रहता है, से गुजरने वाला पानी पोषक तत्वों को घुलनशील रूप में लेकर नीचे आता है। इन तरल पदार्थों का संगहण ही वर्मीवाश है। जिसे किसी घड़े में एकत्र कर लेते हैं। यह शहद के रंग जैसा तरल जैव खाद है। वर्मीवाश में वे सभी पोषक तत्व पाए जाते हैं। जो मुख्यरूप से पौधे के जीवनचक्र के लिए आवश्यक होते हैं। जैसे नाईट्रोजन फास्फोरस पोटाश कैल्शियम, मैग्नीशियम सल्फर एवं सभी सूक्ष्म तत्व पाए जाते हैं। पोषक तत्वों के साथ-साथ पौध बृद्धि हार्मोन जैसे ऑक्सिन, साईटोकाईमिन एवं जिब्रेलिक एसिड भी पाए जाते हैं। विटामिन्स एवं कुछ महत्वपूर्ण सूक्ष्म जीव पाए जाते हैं। जो मुख्य रूप से हमारे फसलों एवं मृदा के लिए बहुत ही लाभदायक हैं। जैसे नाईट्रोजन स्थिरिकरण जीवाणु राईजोबियम, एजोटोवैक्टर,फास्फोरस द्योलक जीवाणु पाए जाते हैं। वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन उत्पादन का सिद्धान्त यह है कि धीरे-धीरे गिरता हुआ पानी अपने साथ केंचुओं के शरीर पर उपस्थिति उत्सर्जी पदार्थों के साथ सड़े हुए जैविक पदार्थों से अन्य पोषक तथ्वों एवं खनिज लवणों को घोलकर अपने साथ ले जाता है। एकत्रित किया हुआ तरल पदार्थ में सभी पोषक तत्व घुलनशील रूप में उपस्थित रहते हैं जो पौधों को आसानी से उपलब्ध हो जाता है। वर्मीवाश बनाने के लिए मुख्य रूप से प्लास्टिक ड्रम या मिट्टी का घड़ा जिसकी सतह पर टोटी लगी हो जिसे किसी छायादार स्थान पर रखकर वर्मीवाश तैयार किया जाता है। प्रथम स्तर में कंकरीट एवं बालू की 5-8 सेंमी मोटी परत डाली जाती है। जिससे तरल पदार्थ का निकास अच्छे से हो सके। द्वितीय स्तर में लकड़ी का बुरादा 2 सेंमी परत के रूप में प्रयोग करते हैं। तृतीय स्तर में वर्मी कम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद 4 सेंमी परत के डाल दिया जाता है। यही स्तर केंचुओं के शयन कक्ष का कार्य भी करते हैं। 1000 केंचुए प्रतिवर्ग मीटर क्षेत्रफल में डाल दिया जाता। चतुर्थ स्तर में अर्ध सड़ा हुए बगीचों की पत्तियों एवं जैविक पदार्थों को पुराना गोबर के साथ अच्छी तरह मिलाकर 30-40 सेंमी ऊंचाई तक भर देते हैं। पांचवें स्तर में टाट के बोरे से ढक दिया जाता है। ड्रम या मिट्टी के बर्तन के ऊपर पानी भरा घड़ा रख दिया जाता है। जिसकी पेंदी में एक छोटा सा छिद्र हो जहां पर रुई लगा दिया जाता है। जिससे पानी बूंद-बूंद कर ड्रम में गिरे। यह प्रक्रिया केंचुआं डालने के एक सप्ताह बाद शुरू किया जाता है। 2-3 दिन बाद टोटी से तरल बूंद-बूंद कर गिरने लगता है। जिसको किसी प्लास्टिक की बाल्टी अथवा घड़े में इकट्ठा किया जाता है। एकत्रित किए हुए पदार्थ को वर्मीवाश कहते हैं। वर्मीवाश तैयार करते समय कुछ महत्वपूर्ण सावधानियों पर ध्यान रखना चाहिए, जैसे वर्मीवाश तैयार करने के लिए कभी भी ताजा गोबर का प्रयोग नहीं करना चाहिए। इससे

केंचुए मर जाते हैं। वर्मीवाश हमेशा छायादार स्थान पर बनाना चाहिए। पात्र के अंदर सघन्यता नहीं बनने देना चाहिए। हरा पदार्थ का प्रयोग नहीं करना चाहिए। एक लीटर वर्मीवाश को 10 लीटर पानी में मिलाकर पत्तियों पर शाम के समय छिड़काव करना चाहिए। फसलों में विभिन्न बीमारियों की रोकथाम के लिए एक लीटर वर्मीवाश को एक लीटर गौमूत्र एवं 10 लीटर पानी में मिलाकर रात भर के लिए रख दिया जाता है। इस तरह से निर्मित 50 लीटर वर्मीवाश एक हेक्टेयर क्षेत्रफल के लिए उपयुक्त होता है। वर्मीवाश का प्रयोग फसलों, सब्जियों, नर्सरी एवं फल वृक्षों की वृद्धि के लिए अधिक गुणवत्ता युक्त फसलों के उत्पादन एवं बिमारियों के रोकथाम के लिए प्रयोग किया जाता है। कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किए गए शोध कार्यों से यह पाया गया है के वर्मीवाश का उपयोग प्याज में करने से उसकी उपज 6 से 6.5 टन प्रति हेक्टेयर तथा आलू की फसल में 7 से 7.5 टन प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है। जो की सामान्य उत्पादन से 15 से 20 प्रतिशत अधिक होती है एवं मिर्च की फसल पर किए गए अध्ययन से यह पाया गया है कि थ्रिप्स एवं माइटस के नियंत्रण के लिए वर्मीवाश का छिड़काव करके उचित प्रबंधन किया जा सकता है। यह एक अच्छा रोगरोधी एवं कीटनाशक की भांति कार्य करता है। इसके अतिरिक्त अन्य लाभ इस प्रकार हैं जैसे वर्मीवाश के प्रयोग से जल की लागत में कमी होती है। तथा अच्छी खेती होती है। पर्यावरण को स्वस्थ रखती है। कम लागत से भूमि की उर्वरक शक्ति बढ़ जाती है। मृदा के भौतिक रासायनिक एवं जैविक गुणों में सुधार होता है। मृदा की जल ग्रहण शक्ति बढ़ जाती है। इसके उपयोग से पैदा किया गया उत्पाद स्वादिष्ट होता है। वर्मीवाश से मृदा स्वस्थ अच्छी होती है। इसका कोई भी अवशेष मृदा के लिए हानिकारक नही होता है। यह सस्ता एवं सुरक्षित होता है। अत: कृषि में वमीवज़श का उपयोग करना बहुत ही लाभदायक है।

जैविक खेती के लिए जरूरी है केंचुआ खाद

केंद्र सरकार जैविक खेती को बढ़ावा दे रही है। वहीं स्वास्थ्य के प्रति बढ़ते जागरूकता के कारण जैविक उत्पादों की मांग बढ़ रही है। भारत में काफी तेजी से जैविक खेती का रकबा बढ़ रहा है। कई राज्य तो जैविक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए विशेष अभियान चला रहे हैं। मांग और समय की जरूरत को देखते हुए जैविक खेती किसानों के लिए आमदनी का एक बेहतर जरिया बनता जा रहा है। साथ ही जैविक खेती के लिए जरूरी वर्मी कम्पोस्ट खाद से भी किसान भरपूर कमाई कर रहे हैं। जैविक खेती के लिए वर्मी कम्पोस्ट खाद काफी अहम है। जैविक खेती के रकबा में बढ़ोतरी के चलते इसकी मांग भी तेजी से बढ़ी है। कई किसान जैविक खेती के साथ पशुपालन भी करते हैं और इस खाद को तैयार करते हैं। इससे उन्हें अच्छा मुनाफा हो रहा है। किसान वर्मी कम्पोस्ट तैयार कर बिक्री करते हैं। वर्तमान में उन्हें हर महीने लाखों में कमाई हो रही है। यहां के किसानों को देश के कई राज्यों से ऑर्डर मिलते हैं। हमारे कृषि वैज्ञानिक वर्मी कम्पोस्ट बनाने का प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है, जिससे किसानों इसकी तरफ रुझान बढ़ रहा है। इस खाद को तैयार करने के लिए सबसे जरूरी अवयव गोबर है। इसे बनाने के लिए किसान गोबर को गोलाई में इकट्ठा किया जाता है और इसमें केंचुआ छोड़ा जाता है। इसे किसान जूट के बोरे से ढ़क देते हैं और ऊपर से पानी का छिड़काव करते हैं ताकि नमी की मात्रा बनी रही। कुछ दिन बाद केंचुए गोबर को वर्मी कम्पोस्ट में बदल देते हैं। गोबर से तैयार वर्मी कम्पोस्ट में सभी पोषक तत्व मौजूद रहते हैं। इसके इस्तेमाल से मिट्टी की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी होती है, जिससे किसानों को अधिक पैदावार मिलती है। वहीं इससे पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य पर असर नहीं पड़ता। रसायनिक खाद के मुकाबले यह सस्ता है। ऐसे में कृषि लागत में कमी आ जाती है, जिससे किसानों की आमदनी में इजाफा हो जाता है।

-212 प्रतिशत तक बढ़ गया बोवनी का रकबा, -उत्पादन तकनीक प्रशिक्षण में बताए उन्नत गुण

शिवपुरी में सरसों उत्पादन की असीम संभावनाएं

खेम राज मौर्य। शिवपुरी

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-सरसों अनुसंधान निदेशालय द्वारा दो दिवसीय कृषक एवं प्रसार कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रशिक्षण में ग्राम पड़ोदा विकासखंड कोलारस में 47 किसान तथा कृषि विज्ञान केंद्र, शिवपुरी में 33 प्रसार कार्यकर्ताओं ने हिस्सा लिया। जिले में कम लागत में अधिक मुनाफे की फसल जो विगत वर्ष 41 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल में हो रही थी, जिसका रकबा बढ़कर इस वर्ष 128 हजार हेक्टेयर तक होकर 212 प्रतिशत तक क्षेत्र में वृद्धि हो गयी है। जिला प्रशासन कृषि विज्ञान केन्द्र एवं कृषि विभाग के संयुक्त प्रयासों से जिले में तिलहनी फसल सरसों का क्षेत्र एवं उत्पादन बढ़ रहा है। जिले में सरसों की उन्नतशील नवीन प्रजाति गिरिराज एवं आरएच-749 प्रजातियां बहुत अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

समन्वित कृषि प्रणाली पर फोकस- प्रशिक्षण के दौरान फसल संग्रहालय का अवलोकन कराते हुए जिले के परिप्रेक्ष्य में सफल प्रजातियों की पहचान कर कृषकों के लिए उन्नत पहचानी जाने वाली किस्म के बारे में जानकारी की गई। कृषि विज्ञान केन्द्र के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ.एमके भार्गव प्रशिक्षण प्रभारी द्वारा सस्य उत्पादन सरसों की अंतवर्ती एवं समन्वित कृषि प्रणाली मधुमक्खी पालन इत्यादि के समन्वय के बारे में प्रेजेंटेशन के द्वारा जानकारी दी गई।

रोग नियंत्रण के बारे में भी बताया- डॉ.जेसी गुप्ता द्वारा सरसों में कीट-रोग नियंत्रण के साथ सरसों उत्पादन की बारीकियों के बारे में प्रेजेंटेशन के द्वारा बतलाया गया। डॉ.पुष्पेंद्र सिंह वैज्ञानिक (पादप प्रजनन) ने उन्नत नई प्रजातियों के बारे में प्रेजेंटेशन दिया। डॉ. नीरज कुशवाहा तकनीकी अधिकारी द्वारा कृषि वानिकी और सरसों उत्पादन के बारे में समझाया। विजय प्रताप सिंह, शोध अध्येता द्वारा कृषि और मौसम परामर्श सूचना के बारे में जानकारी दी गई।

उत्पादन बढ़ाने की संभावनाएं

कृषि विज्ञान केंद्र के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ.एसपी सिंह द्वारा सरसों अनुसंधान निदेशालय से समन्वय कर इन प्रशिक्षणों का आयोजन केवीके के माध्यम से किसानों एवं प्रसार कार्यकर्ताओं में सरसों उत्पादन तकनीक से अवगत कराने के लिए कराया जा रहा है। ऑनलाइन माध्यम से निदेशक विस्तार सेवाएं, राविसिंकृदिवि गवालियर डॉ.वायपी सिंह ने कहा कि सरसों में गंधक पोषक तत्व का संतुलित प्रयोग, उन्नत सस्य उत्पादन तकनीकी तथा पौध संरक्षण के द्वारा जिले में सरसों की उत्पादकता और अधिक बढ़ाई जाने की काफी गुंजाइश है।

उन्नत तकनीक की जरूरत

सरसों अनुसंधान निदेशालय के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अशोक कुमार शर्मा ने कहा कि शिवपुरी जिले में सरसों उत्पादन बढ़ाने की असीम संभावनाएं हैं, जिसे सरसों की उन्नत तकनीक को अपनाकर हासिल किया जा सकता है। उप संचालक, कृषि यूएस तोमर द्वारा विभागीय अधिकारियों से आग्रह किया गया कि प्रशिक्षण के माध्यम से प्राप्त की गई तकनीकी को अधिक से अधिक गांव के किसानों को पहुंचाने का कार्य करें। केन्द्र के फसल संग्रहालय में उन्नत प्रजातियां जिसमें गिरिराज, एनआरसीएचबी 101, एनआरसीडीआर 2, आरएच-749, आरएस-725, आरएसके 406. आरवीटी-1 एवं एनआरसीवायएस 05-02 को लगाया गया है।

इफ्को नैनो यूरिया किसानों के लिए साबित होगी वरदान

इधर, शिवपुरी में इफ्को द्वारा कोलारस के ग्राम अटरूनी में इफ्को नैनो यूरिया उपयोग संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में उप संचालक कृषि यूएस तोमर, विशेष अतिथि के रूप मे इफ्को भोपाल के संयुक्त महाप्रबंधक बहादुर राम, सहायक संचालक उधानिकी एसएस कुशवाह, मुख्य प्रबंधक इफ्को सेवाएं डॉ.डीके सोलंकी एवं मुख्य प्रबंधक इफ्को ग्वालियर आरकेएस राठौर उपस्थित रहे। उप संचालक कृषि यूएस तोमर ने नैनो यूरिया का लाभ बताते हुए किसानों को इफ्को नैनो यूरिया का उपयोग अधिक से अधिक करने की सलाह दी। इससे किसान कम लागत में अधिक पैदावार प्राप्त कर सकता है। साथ ही बताया कि अधिक से अधिक जैविक उत्पादों का उपयोग कर खेती करें जिससे किसान मृदा की उर्वरा शक्ति को बनाए रखते हुए अधिक पैदावार प्राप्त कर सकते हैं। मुख्य प्रबंधक इफ्को डॉ.डीके सोलंकी ने किसानों को जल विलेय उर्वरकों के बारे में विस्तार से बताया कि यह सामान्य उर्वरकों से अधिक दक्षता वाले उर्वरक हैं एवं इनका उपयोग पर्णीय छिड़काव कर तथा ड्रीप के माध्यम से कर सकते हैं।

संगोष्ठी में कृषि उप संचालक यूएस तोमर बोले

एक मार्च से पौधारोपण महाअभियान

खरगोन। अंकुर योजना अंतर्गत मप्र जन अभियान परिषद एवं सहायक नोडल अधिकारी विजय शर्मा ने बताया कि योजना अंतर्गत 01 मार्च से 05 मार्च तक पौधारोपण का महाअभियान चलाया जाएगा। जिसके अंतर्गत जनसमूह की भागीदारी से अधिक से अधिक पौधारोपण कर वायू एप के माध्यम से पौधा लगाते हुए फोटो अपलोड की जाएगी। मोबाइल नंबर पर मिस्डकॉल कर आपका पौधा गणना में आ जाएगा। पौधारोपण की फोटो के साथ प्रमाण पत्र मप्र शासन पर अपलोड होगा। इस पौधारोपण महाअभियान के लिए कलेक्टर अनुग्रहा पी की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया है। गठित समिति के सदस्य एसपी सिद्धार्थ चौधरी, डीएफओ वन विभाग खरगोन, जिला पंचायत सीईओ, समस्त अनुभागों के एसडीएम, डीईओ, सीएचमओ, कृषि उपसंचालक, महाविद्यालय के प्रचार्य, सहायक संचालक उद्यानिकी, परियोजना अधिकारी शहरी, उप संचालक पशु चिकित्सालय, जिला परियोजना प्रबंधक एनआरएलएम, जिला परियोजना मप्र जन अभियान परिषद के सदस्य रहेंगे।

फायदों के बारे में किसानों को अवगत कराया

खेतों का भ्रमण कर वैज्ञानिकों ने देखा जीरो टिलेज गेहूं प्रदर्शन

टीकमगढ़। संवाददाता

प्राकृतिक खेती अंतर्गत जीरो टिलेज मशीन से गेहूं का प्रदर्शन किसानों के खेतों पर रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विवि झांसी एवं अंतरराष्ट्रीय गेहूं एवं मक्का अनुसंधान संस्था मैक्सिको के सौजन्य से 2021-22 रबी मौसम में क्रियान्वित किए गए हैं। विगत दिवस इन प्रदर्शनों का डॉ. एसएस सिंह, संचालक विस्तार सेवाएं झांसी, डॉ. रबी गोपाल, प्रधान वैज्ञानिक, मैक्सिको संस्था को डॉ. बीएस किरार, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख, डॉ. आरके प्रजापति, वैज्ञानिक, आईडी सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा गांव हसगौरा, बटवाह, कौड़िया में किसानों के खेतों पर जीरो टिलेज गेहूं प्रदर्शन का अवलोकन कराया। साथ ही वैज्ञानिकों ने किसानों से प्रदर्शन में अपनाई तकनीक एवं प्रदर्शन तकनीक पर विचार जाने। किसानों ने बताया कि कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा जीरो टिलेज मशीन से खेत की बिना जुताई किए बोवनी कराई गई। उसके बाद हल्की सिंचाई की गयी, जिससे हमारे 2-3 जुताई के पैसे बचे। वर्तमान में फसल बिना जुताई करके बोने के बाद भी अच्छी है।

ज्यादा समय तक रहती है नमी

वैज्ञानिक डॉ. रवि गोपाल, डॉ. एसएस सिंह ने जीरो टिलेज खेती के फायदों के अंतर्गत बताया कि इस विधि से उत्पादन लागत कम लगती है। भूमि की भौतिक संरचना मे सुधार व फसल को कार्बन अधिक मिलता है। कम पानी में अधिक समय तक नमी संरक्षित रहती है। जड़ों का अच्छा विकास होता है जिससे उत्पादन में वृद्धि होती है। मार्च में गर्मी बढ़ने, तेज हवाएं चलने पर भी फसल समय से ही परिपक्व होती है, जबकि दूसरी तकनीक से बोई गयी फसल समय से पहले परिपक्व हो जाती है। अर्थात इस तकनीक को ज्यादा से ज्यादा किसानों तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएं ताकि किसान इस तकनीक का लाभ प्राप्त कर सकें।

बच्चों को अच्छे भोजन के साथ मिलेगी बागवानी की शिक्षा

शाजापुर की 398 शालाओं में हो रहा मां की बगिया का निर्माण

अमजद खान, शाजापुर।

जिले में प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजनांतर्गत जिले की प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत बच्चों को पका हुआ गर्म भोजन वितरण किया जा रहा हैं। इस के लिए ग्रामीण क्षेत्र की शालाओं में किचन गार्डन (मां की बगिया) तैयार किया जा रहा है। जिसमें भोजन में प्रयुक्त होने वाली मौसमी सब्जियों को उगाया जाएगा। जिससे क्रियान्वयन एजेंसी को काफी लाभ हुआ है। उक्त को दृष्टिगत रखते हुए वर्तमान में जिले की चिन्हित 398 शालाओं में मनरेगा अभिसरण से मां की बगिया का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें से 58 किचन गार्डन कार्य पूर्ण करा लिया गया हैं। शेष कार्य भी प्रगतिरत है। साथ ही महिला एवं बाल विकास विभाग से संबंध 470 आंगनवाडियों में मां की बगिया तैयार कराने की योजना प्रस्तावित है। जिससे आंगनवाड़ियों के बच्चों को भी लाभ होगा।

बच्चों को कर रहे प्रोत्साहित

प्रधानमंत्री पोषण शक्ति निर्माण योजना से संबंद्ध क्रियान्वयन एजेन सी को भोजन पकाने के लिए ताजी सब्जी उपलब्ध होगी, आर्थिक मदद भी होगी। शालाओं में किचनशेड से प्रतिदिन निकलने वाला अनुपयोगी पानी को किचन गार्डन में उपयोग कराया जा रहा है, जिससे पानी का उचित उपयोग/प्रबंधन के प्रयास शालाओं में जारी है। मां की बगिया स्थापित किए जाने से शालाओं में अध्ययनरत बच्चों का बागवानी के प्रति प्रोत्साहित करना है।

नरसिंहगढ़ आजीविका भवन में शुरू हुआ दीदी कैफे

राजगढ़। जिले के नरसिंहगढ़ शहर में स्थित आजीविका भवन में दीदी कैफे का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर नरसिंहगढ़ विधायक राजवर्धन सिंह एवं ब्यावरा विधायक रामचंद्र दांगी उपस्थित रहे। महिला समूहों द्वारा संचालित इस आजीविका दीदी कैफे में चाय नाश्ते के साथ गन्ने के रस का विक्रय भी किया जाएगा। इस अवसर पर अतिथियों ने आजीविका भवन में संचालित विभिन्न गतिविधियों का भी जायजा लिया तथा महिलाओं के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर जनपद पंचायत नरसिंहगढ़ के सीईओ शंकर सिंह पासे, थाना प्रभारी रविंद्र सांवरिया, मप्र ग्रामीण बैंक शाखा के शाखा प्रबंधक, आजीविका मिशन के ब्लॉक प्रबंधक रमेश दांगी एवं समस्त टीम उपस्थित रही।

-जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय ने कर दी शुरुआत

कृषि छात्र-छात्राएं अब खेती के साथ पशुओं पर भी करेंगे शोध

संवाददाता, जबलपुर

फसलों पर शोध करने वाले कृषि विद्यार्थियों के अनुसंधान का दायरा बढ़ाने जा रहा है। कृषि छात्र-छात्राएं अब कृषि के साथ पशुओं पर भी शोध करेंगे। इसके लिए जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि ने शुरुआत कर दी है। दरअसल, कृषि विवि को राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तति प्रोजेक्ट मिला है। जिसमें विद्यार्थियों की मदद से डेयरी उद्योग लगाने, बढ़ाने और दूध की प्रोसेसिंग करने के साथ गाय की नस्ल बढ़ाने का काम किया जाएगा। यह काम कृषि छात्रों के जिम्मे होगा। अभी तक यह काम वेटरनरी विवि के विज्ञानी और विद्यार्थी कर रहे हैं। कोरोना काल के दौरान कृषि के बढ़ते क्षेत्र को देखते हुए कृषि छात्रों को भी अब वेटरनरी से जुड़े कामों से जोड़ा जा रहा है।

यह है प्रोजेक्ट- जनेकृविवि को गायों की नस्ल बढ़ाने और उनसे मिलने वाले दूध से उत्पाद तैयार करने का प्रशिक्षण प्रोग्राम तैयार किया गया है। इस काम के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत लगभग 95 लाख रुपए दिए गए हैं। इस प्रोजेक्ट का नाम माडल डेयरी नाम दिया गया है। इसमें डेयरी उद्योग को बढ़ाने को लेकर सभी पक्षों को शामिल किया है, ताकि कृषि छात्रों को दिए जाने वाले प्रशिक्षण में मदद मिले।

विवि की डेयरी करेगी मदद- विवि को मिले इस प्रोजेक्ट में यहां पहले से चल रहे डेयरी और उनके अनुभवी इस काम में मदद करेंगे। विवि ने आर्मी के डेयरी फार्म से 20 गाय ली थीं। इन पशुओं की सही देखभाल कर विवि के डेयरी फार्म में आज लगभग 70 से ज्यादा गाय और बछड़े हैं। इनमें से दूध देने वाली गाय की संख्या 40 के पार पहुंच गई है। विवि अब इस डेयरी फार्म की मदद से अपने अनुसंधान के दायरे को बढ़ाने जा रहा है।

विवि में डेयरी फार्म पहले से ही है, लेकिन अब प्रोजेक्ट मिलने के बाद इसका दायरा बढ़ा रहा है। कृषि विद्यार्थी और किसान, दोनों को इससे जोड़कर दूध के उत्पाद तैयार करने और उनकी प्रोसेसिंग का काम बड़े स्तर पर होगा।
प्रो.प्रदीप बिसेन, कुलपति, जनेकृविवि

डेयरी फार्म में आज 200 लीटर से ज्यादा दूध मिल रही है। प्रोजेक्ट की मदद से जल्द ही दूध के उत्पाद भी तैयार करेंगे। इसके साथ कृषि के छात्र-छात्राएं गायों के नस्ल सुधार पर भी शोध करेंगे। इससे किसानों की आय भी बढ़ेगी
डॉ.एलएस शेखवत, डेयरी फार्म के प्रभारी

-किसानों को कम लागत में होगा अच्छा मुनाफा

मार्च में करें इन फसलों की खेती, हो जाएंगे मालामाल

भोपाल। किसान मार्च माह में अगर सही समय पर सही फसल की बोवनी करेंगे, तो यह तय है कि उन्हें उपज भी अच्छी मिलेगी। जब सही सीजन में मांग के मुताबिक सही उत्पाद बाजार में आएगा, तो किसानों की बिक्री भी बढ़ेगी और इस तरह उनका मुनाफा भी अच्छा होगा। अगर किसान सब्जियों की बोवनी करने वाले हैं और चाहते हैं कि सही समय पर अच्छी पैदावार मिले, तो फसल का चुनाव भी उसी के मुताबिक करें। मार्च में किस फसल की खेती कर सकते हैं। आने वाले मौसम साथ समय को देखते हुए ही किसानों को बोवनी करनी चाहिए, जिससे बाजार में उसकी मांग के चलते अच्छी कीमत मिल सके। कुछ फसलें जिनकी बुआई मार्च में करके किसान अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

ककड़ी: मार्च के महीने ककड़ी की बोवनी आसानी से कर सकते हैं। जहां पहाड़ी क्षेत्रों में इसकी बोवनी इस महीने की जाती है। मध्य भारत के किसान फरवरी-जून में भी इसे लगाते हैं। साथ ही दक्षिण भारत में जनवरी-मार्च तक इसकी बुवाई चलती है। इसका सेवन खास तौर से कच्ची अवस्था में सलाद के रूप में किया जाता है। गर्मियों में इसके सेवन पेट को ठंडक देता है। साथ ही लू लगने की संभावना को भी कम करता है। इसकी उन्नत खेती के लिए गर्म एवं शुष्क जलवायु उपयुक्त होती है।

उन्नत किस्में: अर्का शीतल,लखनऊ अर्ली, नसदार, नस रहित लम्बा हरा और सिक्किम ककड़ी।

भिंडी: किसान भिंडी की अगेती किस्म की बोवनी फरवरी से मार्च के बीच कर सकते हैं। यह खेती किसी भी मिट्टी में की जा सकती है। खेती के लिए खेत को दो-तीन बार जोतकर मिट्टी को भुरभुरा कर लेना चाहिए और फिर पाटा चलाकर समतल कर बुवाई करनी चाहिए। बोवनी कतार में करनी चाहिए। बोवनी के 15-20 दिन बाद पहली निराई-गुड़ाई करना बहुत जरूरी है।

उन्नत किस्में: हिसार उन्नत, वी आर ओ- 6, पूसा ए- 4, परभनी क्रांति, पंजाब- 7, अर्का अनामिका, वर्षा उपहार, अर्का अभय, हिसार नवीन, एचबीएच।

करेला: करेला कई बिमारियों के लिए लाभदायक है, इसलिए इसकी मांग भी बाजार में ज्यादा रहती है। गर्मियों में तैयार होने वाली इसकी फसल बहुउपयोगी है। किसान इससे अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं। करेले की फसल को पूरे भारत में कई प्रकार की मिट्टी में उगाया जाता है। वैसे इसकी अच्छी वृद्धि और उत्पादन के लिए अच्छे जल निकास युक्त जीवांश वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है।

उन्नत किस्में: पूसा हाइब्रिड 1,2, पूसा दो मौसमी, पूसा विशेष, कल्याणपुर, प्रिया को- 1, एसडीयू- 1, कोइम्बटूर लांग, कल्यानपुर सोना, बारहमासी करेला, पंजाब करेला- 1, पंजाब-14, सोलन हरा, सोलन, बारहमासी।

लौकी: लौकी में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट और खनिजलवण के अलावा पर्याप्त मात्रा में विटामिन पाए जाते हैं। इसकी खेती पहाड़ी इलाकों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक की जाती है। इसके सेवन से गर्मी दूर होती है और यह पेट सम्बन्धी रोगों को भी दूर भगाती है। इसकी खेती के लिए गर्म और आद्र जलवायु की जरूरत होती है। सीधे खेत में बुवाई करने के लिए बोवनी से पहले बीजों को 24 घंटे पानी में भिगोकर रखें। इससे बीजों की अंकुरण प्रक्रिया गतिशील हो जाती है। इसके बाद बीजों को खेत में बोया जा सकता है।

उन्नत किस्में: पूसा संतुष्टिब, पूसा संदेश (गोल फल), पूसा समृध्दि एवं पूसा हाईब्रिड 3, नरेंद्र रश्मि, नरेंद्र शिशिर, नरेंद्र धारीदार, काशी गंगा, काशी बहार।

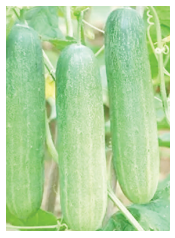

खीरा: खीरे की तासीर ठंडी होती है और यही वजह है कि लोग इसका उपयोग गर्मियों में ज्यादा करते हैं जिससे अपने आप को गर्मी से बचा सकें। इसका सेवन पानी की कमी को भी दूर करता है। देश के कई क्षेत्रों में इसकी खेती प्राथमिकता पर की जाती है। इसकी खेती के लिए सर्वाधिक तापमान 40 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 20 डिग्री सेल्सियस होना चाहिए। साथ ही अच्छे विकास के लिए तथा फल-फूल के लिए 25 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा माना जाता है। इसकी खेती के लिए बलुई दोमट या दोमट भूमि, जल निकास के साथ बेहतर मानी जाती है।

उन्नत किस्में: जापानी लौंग ग्रीन, चयन, स्ट्रेट- 8 और पोइनसेट, स्वर्ण पूर्णिमा, पूसा उदय, पूना खीरा, पंजाब सलेक्शन, पूसा संयोग, पूसा बरखा, खीरा 90, कल्यानपुर हरा खीरा, कल्यानपुर मध्यम और खीरा 75, पीसीयूएच- 1, स्वर्ण पूर्णा, स्वर्ण शीतल।

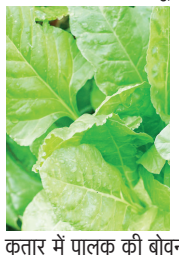

पालक: किसान बलुई दोमट मिट्टी में इसकी बुवाई कर सकते हैं। इसके साथ ही मिट्टी को पलेवा कर जुताई के लिए तैयार करे। इसके बाद हल से एक जुताई कर 3 बार हैरो या कल्टीवेटर चला लें जिससे मिटटी भुरभुरी हो जाए। अब समतल कर इसमें बोवनी कर सकते हैं। ध्यान देने वाली बात यह है कि किसान कतार में पालक की बोवनी करें।

उन्नत किस्में: पूसा पालक, पूसा हरित, पूसा ज्योति, बनर्जी जाइंट, हिसार सिलेक्शन 23, पन्त का कम्पोजीटी 1, पालक न 51-16।

खरबूज: खरबूज की बोवनी का समय नवंबर से लेकर मार्च तक का है। इसकी खेती के लिए अधिक तापमान वाली जलवायु सबसे अच्छी मानी जाती है। इस फसल के लिए गर्म जलवायु अधिक होने से इसका विकास भी अच्छा होता है। वहीं जलवायु में नमि होने की वजह से पत्तियों में बीमारी लगने का खतरा बन जाता है। भूमि की तैयारी के समय फास्फेट और पोटाश के साथ नत्रजन की आधी मात्रा को मिलाना चाहिए। वहीं बाकी नत्रजन की मात्रा को बुवाई के 25-30 दिन बाद इस्तेमाल करना चाहिए।

उन्नत किस्में: पूसा रसाल, दुर्गापुरा लाल, आसाही-यामाटो, शुगर बेबी, न्यू हेम्पसाइन मिडगेट, अर्का ज्योति, दुर्गापुरा केसर।

बैंगन: किसान इस महीने बैंगन की खेती कर सकते हैं। इसके लिए जल निकासी वाली दोमट मिट्टी उपयुक्त मानी जाती है। खेत में एक हेक्टेयर के लिए 4 से 5 ट्रॉली गोबर खाद का इस्तेमाल किसान जरूर करें। ये दो तरह के होते हैं। आप गोल बैंगन के साथ लम्बे बैंगन की भी बोवनी कर सकते हैं।

उन्नत किस्में: लम्बे बैगन: पूसा परपल क्लसटर, पूसा क्रान्ति, पूसा परपल लोंग, पन्त सम्राट, पंजाब सदाबहार आदि।

गोल बैंगन: एच- 4, पी- 8, पूसा अनमोल, पूसा परपल राउन्ड, पन्त ऋतु राज, पीबी- 91-2, टी-3, एच- 8, डीबी एसआर- 31, डीबी आर- 8।

संकर किस्में: अर्का नवनीत, पूसा हाइब्रिड- 6 आदि।

» मेरी पॉलिसी मेरे हाथ राष्ट्रव्यापी अभियान का शुभारंभ

» किसानों को मिली फसलों की बीमा पॉलिसी, बरलाई में बनेगा रेडिमेड गारमेंट पार्क

» किसान देश की आत्मा, उनसे गांव व देश का विकास संभव

फसल बीमा के 7618 करोड़ रुपए प्रदेश के किसानों के खातों में डाले और शिवराज बोले

सीएम, केंद्रीय मंत्री ने फसल बीमा की पालिसी का वितरण किया

चेतावनी दी थी किसानों का नुकसान कम लिखा तो नौकरी के लायक नहीं छोड़ूंगा

इंदौर। संवाददाता

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के तहत अब योजना के दस्तावेज के रूप में किसानों को पहली बार इसकी पालिसी भी दी गई। इंदौर जिले के बूढ़ी बरलाई गांव में आयोजित मेरी पालिसी मेरे हाथ कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान और केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री नरेन्द्रसिंह तोमर के हाथों किसानों को यह पालिसी बांटी दी गई। मुख्यमंत्री ने कहा कि फसल बीमा के कुल 7618 करोड़ रुपए किसानों के खातों में डाले गए हैं। इसमें इंदौर जिले के किसानों को 1300 करोड़ रुपए की राशि दी गई है।

उन्होंने कहा कि फसल बीमा योजना के बंटवारे में पारदर्शिता रखी है। भारी बारिश के कारण जब सोयाबीन की फसल खराब हुई थी, उस समय हमने अधिकारियों को रातों को भी काम कराया। उनसे कहा गया था कि किसानों को जो नुकसान हुआ है, उसका मुआयना करें और जितना भी नुकसान हुआ है, उसे जस का तस लिखें। सभी अधिकारियों को सख्त चेतावनी दी गई थी, किसानों का नुकसान ज्यादा लिखा तो चलेगा, लेकिन कम लिखा तो नौकरी करने लायक नहीं छोड़ूंगा। किसानों को उनके नुकसान भी पूरी भरपाई होनी चाहिए। शिवराज ने कहा कि इससे पहले कभी इतनी बड़ी राशि किसानों को नहीं दी गई। न मुआवजा, न बीमा की राशि, न सिंचाई योजनाओं पर काम किया है। फसल खराब होने पर भरपाई के तौर पर 200 से 400 रुपए किसानों के खाते में जमा होते थे। वर्तमान सरकार अब सिंचाई क्षेत्र को आगे बढ़ाएंगे और इसे 65 लाख हेक्टेयर तक ले जाएंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछली सरकार ने प्रीमियम राशि का भुगतान नहीं किया था। हमारी सरकार बनते ही हमने सबसे पहले बीमा राशि का प्रीमियम भरा। वर्तमान सरकार ने पिछले 22 महीनों में किसानों के खातों में विभिन्न मदों में एक लाख 72 हजार 854 करोड़ जमा कराए हैं। सरकार किसानों की बेहतरी के प्रतिबद्ध है। किसान बस मेहनत करते जाएं।

किसानों को अब 40 लाख तक मिल रहेः तोमर

केंद्रीय कृषि मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि साल 2016 में फरवरी में सीहोर में ही प्रधानमंत्री बीमा योजना का नया प्रारूप सामने आया था। अब पालिसी भी इसी जगह हमारे पास है। यह सभी कुछ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कारण संभव हुआ। शिवराज सिंह के नेतृत्व वाली सरकार ने मप्र में ज्यादा गंभीरता से काम हो रहा है। फसल खराब होने पर किसानों को मुआवजे के तौर पर एक समय 200 से 400 रुपए मिलते थे। अब यह राशि 20 से 40 लाख मिल रहे हैं। किसान के जीवनस्तर में बदलाव का प्रयास कर रहे हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि यह राशि सीधे किसानों तक पहुंचा, बीच में कोई दलाल नहीं है। केंद्र और राज्य सरकार की कोशिश है कि किसानों का जीवनस्तर बेहतर किया जाए। एमएसपी पर खरीद होने वाली आय सीधे किसान के खाते में पहुंचता है। भारत को आत्मनिर्भर बनाना है तो किसान को, गांव को, आत्मनिर्भर बनाना होगा। पहले प्रदेश में सिंचाई ज्यादा नहीं हो रही थी, लेकिन अब 46 हजार हेक्टेयर में सिंचाई हो रही है। इसके लिए सभी सुविधाएं जुटाई गई है। जैविक खेती में अब उत्पादन में ज्यादा आय है।

मेला और प्रदर्शनी लगाई

कुछ किसानों को सांकेतिक रूप से फसल बीमा की पालिसी का वितरण किया गया। साथ ही चयनित फार्मर्स प्रोड्यूसर आर्गनाइजेशन (एफपीओ) को प्रमाण-पत्र भी बांटे गए। कार्यक्रम स्थल पर कृषि विभाग और अन्य कंपनियों द्वारा कृषि मेला और प्रदर्शनी भी लगाई गई थी। मेले में किसानों को खेती में ड्रोन के उपयोग के बारे में भी बताया गया।

किसानों पर धनवर्षा

मंत्री तुलसी सिलावट ने कहा कि शिवराज सिंह ने प्रधानमंत्री की सेवा को आगे बढ़ाया है। प्रदेश में किसानों को देश की तुलना में सबसे ज्यादा पैसे दिए गए हैं। मुख्यमंत्री ने सांवेर के लिए सड़क, पानी की समस्या को खत्म किया है। पहले कहीं भी बैठकर समीक्षा हो जाती थी, लेकिन अब फसल बीमा पालिसी से घर पहुंचकर ही पूर्ण करनी होगी।

किसानों का रखा ध्यान

इंदौर के सांसद शंकर लालवानी नेता कहा कि केंद्र सरकार की मंशा है किसानों की आय दोगुनी हो। उद्यानिकी राज्य मंत्री भरतसिंह कुशवाह ने कहा कि किसानों के लिए कल्याणकारी सरकार है प्रदेश में। चाहे केंद्र सरकार का बजट हो या राज्य सरकार का बजट हो दोनों सरकारों ने किसानों का बहुत ध्यान रखा है।

सिर्फ संतरे से साल की आय 1.5 लाख

सतना का किसान कर रहा संतरे की खेती

दीपक गौतम। सतना

जिले की बिरसिंहपुर तहसील के पगार कला गांव में डेढ़ एकड़ खेत में संतरे के 250 पेड़ लगे हैं। फल आने शुरू हो गए हैं। आने वाले समय में संतरे का उत्पादन बढ़ता जाएगा। तेज नारायण कहते हैं, संतरा का पौधा करीब 6 साल में फल देने लायक हो जाता है, जैसे जैसे पेड़ बड़े होते जाएंगे। फल आने की मात्रा बढ़ती जाएगी। पिछले साल कुल 20 क्विंटल ही उत्पादन हुआ था, जबकि इस साल जनवरी में ही 40 क्विंटल हुआ। यानि एक साल में दोगुना हो गया। एक समय ऐसा आयेगा जब एक पेड़ में ही एक क्विंटल तक फल आएंगे। फिलहाल एक पेड़ में 15 से 20 किलो ही फल निकल रहा है।

नागपुर से लाए थे 250 पौधे

तेज नारायण के मुताबिक संतरे की बाग में उनका जो खर्च लगना था वो लग गया। अब आने दिनों में खर्च कम और बचत ज्यादा होगी। तेज नारायण 7 साल पहले नागपुर से संतरे के 250 पौधे लाए थे। वो सात साल पहले नागपुर से 35 रुपए प्रति पेड़ के हिसाब से पौधे लाए थे। इन्हें तैयार करने में शुरुआत में काफी मेहनत करनी पड़ी, क्योंकि पानी की समस्या है। लेकिन बाकी फसलों की अपेक्षा लागत कम और मुनाफा ज्यादा है।

400 एकड़ जमीन पथरीली

तेज नारायण बताते हैं कि उनके गांव पगार कला की अधिकांश जमीन पथरीली है। उनके खेत से करीब आधा किमी दूर पर ही पहाड़ है। पहाड़ की तलहटी में करीब 400 एकड़ जमीन पथरीली है। जिसमें किसान गेहूं, चना, सरसों, उड़द और धान की खेती करते हैं, लेकिन लेकिन बढ़ती लागत और सिंचाई की समस्या से किसान परेशान हैं।

पानी की विकराल समस्या

उनका कहना है कि यहां ऊपर जमीन तो पथरीली है ही जमीन के नीचे भी पत्थर, जिससे पूरे इलाके में पानी की कमी रहती है, पानी की कमी ही ये खेती छोड़ने का बड़ा कारण भी है। इसमें ही उनका ज्यादा खर्च हो जाता था और फसल से जो मिलता था उससे केवल भोजन हो सकता था। अन्य जरूरतों के लिए सब्जियों से खर्च निकालना पड़ता था।

गर्मी में साथ छोड़ देता है पंप| संतरे की दूसरी फसलों की तुलना करते हुए वो कहते हैं, संतरे के पौधे तैयार करने में तो काफी मेहनत लगी। लेकिन गेहूं में तो कई बार एक ही फसल में तीन से पांच सिंचाई करनी पड़ती हैं। यहां जिन किसानों के पास मोटर पंप है तो उनका चल जाता है हमारे पास तब नहीं था इसलिए 1200 रुपए प्रति एकड़ सिंचाई देनी पड़ती थी। यह बात हमेशा परेशान करती थी। अब तो खुद का पंप भी है, लेकिन गर्मी में वो भी काम नहीं करता। तेज नारायण बताते हैं, संतरे के पौधों में अब तो कोई खर्च नहीं है। पांच सालों में खर्च के बात करें तो मुश्किल से 15-20 हजार रुपए ही खर्च किए हैं। जहां तक धान और गेहूं के फसल उत्पादन की बात है तो केवल इतना हो जाता था कि परिवार खा सकता था।

संतरे के साथ करते है और भी खेती

तेज नारायण के पास 3 एकड़ जमीन है, जिसमें से डेढ़ एकड़ में संतरा और बाकी में नींबू और अमरूद के पौधे लगे हैं। संतरे के एक पेड़ से दूसरे पेड़ की दूरी करीब 3 मीटर है। तो बाकी बची जमीन में वो टमाटर और बैंगन समेत दूसरी सब्जियों वाली फसलों की खेती करते हैं। पिछले साल उन्होंने 40 हजार के संतरे के साथ 20 हजार की 20 हजार की सब्जियां बेची थी। इस साल अभी टमाटर और बैंगन में फल आने शुरू हुए हैं। खाली संतरे उनकी इस साल की आय 1.5 लाख है।

नौकरी छोड़कर अपनाई खेती

तेज नारायण ने नौकरी छोड़ कर खेती को ही जीविकोपार्जन का साधन बना लिया। 12वीं तक पढ़े तेज नारायण की 2004 में शादी हो गई और 2010 में दिल्ली चले गए। जहां एक गियर बनाने वाली फैक्ट्री में काम करते थे लेकिन खुश नहीं थे। वो कहते हैं, फैक्ट्री में 9000 रुपए की तनख्वाह मिलती थी, नौकरी से मोहभंग हुआ तो 2015 में घर लौट आया। फिर से खेती किसानी का काम शुरू कर दिया।

प्रतिकूल जलवायु में भी कर रहे प्रयास

तेज नारायण के मुताबिक उन्हें संतरे की खेती में धान गेहूं से ज्यादा मुनाफा अभी से मिलने लगा है। वो मध्य प्रदेश के बघेलखंड इलाके में संतरे की खेती का प्रयोग करने वाले पहले किसान भी बन गए हैं। हालांकि उद्यानिकी विशेषज्ञ यहां की जलवायु को संतरे के उत्पादन के लिए उतना अच्छा नहीं मानते हैं।

विभिन्न फसलों की उपलब्धता एवं जैव विविधता की जानकारी दी गई

जबलपुर कृषि विश्वविद्यालय में बीज संग्रहालय का उद्घाटन

संग्रहालय की रूपरेखा एवं मूल रूप प्रदान करने में संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जीके कोतू का अमूल्य योगदान

जबलपुर। संवाददाता

जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय पिछले चार दशक से राष्ट्र स्तर पर प्रजनन बीज के उत्पादन गुणवत्ता एवं उपलब्धता में प्रथम है। मध्यप्रदेश फसलों की जैव विविधता के लिए ख्याति प्राप्त है। मप्र के आदिवासी बाहुल्य क्षेत्रों में अनेक अति उपयोगी पोषक तत्वों के साथ ही गुणवत्ता में अग्रणी फसलों एवं किसानों का उत्पादन होता रहा है इनका फसलों के बीजों का समुचित संरक्षण एवं संवर्धन का कार्य ना होने से विलुप्त होने की कगार में है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए बीज संग्रहालय का निर्माण विवि में किया गया है। बीज संग्रहालय का उद्घाटन कुलपति डॉ. प्रदीप कुमार बिसेन ने किया। संग्रहालय की रूपरेखा एवं मूल रूप प्रदान करने में संचालक अनुसंधान सेवायें डॉ. जीके कोतू का अमूल्य योगदान है। मध्यप्रदेश की जैव विविधता से पूर्ण आदिवासी क्षेत्रों में धान की लगभग 7000 परंपरागत किस्में उगाई जाती है। आज यह किस्में लुप्त हो रही है इनके संरक्षण के साथ देश में उपलब्ध जैव विविधता एवं इसका व्यापक प्रचार-प्रसार व जागरूक करने के उद्देश्य से बीज संग्रहालय की स्थापना की गई है।

प्रथम बीज संग्रहालय, जहां फसलों की उपलब्धता एवं जैव विविधता की जानकारी

यह बीज क्षेत्र राष्ट्र का प्रथम बीज संग्रहालय होगा, जहां विभिन्न फसलों की उपलब्धता एवं जैव विविधता की जानकारी दी गई है। इस म्यूजियम में कोदो, कुटकी, रागी, मंडिया सिकिया इत्यादि इनकी कुछ किस्में जैसे कुटकी की सीतही किस्म एवं बैगा जनजातियों द्वारा उगाई जाने वाली अरहर की बेगानी राहर एवं नाग दमन कुटकी विशेष आकर्षण का केंद्र है। धान की औषधीय एवं अन्य गुणों से भरपूर किसम जैसे लाल धान, बेहासान, सठिया ठर्री, भरी क्षत्री, हिंरदी कपूर, चित्रोर, जीरा शंकर, रानी काजल, दिल बक्सा आदि कई किस्मों के जीवंत प्रदर्शन मुख्य आकर्षण के केंद्र हैं। गेहूं सोयाबीन एवं अन्य फसलों के बीज व उनके क्रमिक विकास की जानकारी भी रोचक ढंग से संग्रहालय में प्रस्तुत की गई है।

मध्यप्रदेश के 13 हजार 'किसान मित्रों' को किया जाएगा प्रशिक्षित

भोपाल। संवाददाता

मध्य प्रदेश के कृषि मंत्री कमल पटेल ने कहा कि राज्य में प्राकृतिक खेती में अपार संभावनाएं हैं। उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए कार्य योजना बनाने का निर्देश भी दिया। कमल पटेल भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान में कृषि वैज्ञानिकों से प्राकृतिक खेती पर चर्चा कर रहे थे। मंत्री ने संस्थान में फसलों का निरीक्षण भी किया। केंद्र सरकार भी प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने पर विशेष जोर दे रही है। इस बार के बजट में भी प्राकृतिक और जैविक खेती के लिए घोषणाएं की गई हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लगातार जीरो बजट नेचुरल फार्मिंग को अपनाने के लिए किसानों से अपील कर रहे हैं। कृषि मंत्री ने कृषि वैज्ञानिकों से कहा कि प्राकृतिक खेती से जुड़ी गतिविधियों का वैज्ञानिक प्रमाणीकरण करें, जिससे युवा बेहिचक होकर इससे जुड़े, उन्होंने मिट्टी में उपलब्ध सूक्ष्म जीवों की संख्या एवं प्रकारों का मानचित्रण किए जाने में भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान से अग्रणी भूमिका निभाने का आह्वान किया। पटेल ने इस कार्य में प्रदेश में मौजूद कृषि विवि को समन्वय कर कार्य करने को कहा है। उन्होंने अपेक्षा की कि यह कार्य आगामी 6 माह में पूर्ण कर लिया जाए। प्रदेश में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया जाएगा। इसके लिए मास्टर ट्रेनर तैयार होंगे, जो किसानों को प्रशिक्षित करेंगे। 13 हजार किसान मित्रों को प्राकृतिक खेती के विस्तार कार्यक्रम में लगाया जाएगा। मध्य प्रदेश में प्राकृतिक खेती के लिए दो सौ क्लस्टर तैयार किए जाएंगे। यह बात कृषि मंत्री ने भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान में कृषि विज्ञानियों से चर्चा के दौरान कही। उन्होंने बताया कि प्रदेश में प्राकृतिक खेती की अपार संभावनाएं हैं। इसको लेकर कार्ययोजना बनाई जा रही है। इसमें दो सौ क्लस्टर तैयार किए जाएंगे। युवा प्राकृतिक खेती से जुड़ें।

» प्राकृतिक खेती के लिए किसानों को प्रोत्साहित करेंगे मास्टर ट्रेनर

» कृषि मंत्री ने भारतीय मृदा विज्ञान संस्थान के विज्ञानियों से की चर्चा

प्रदेश की 259 मंडियों में 150 घाटे में चल रही

तीन साल में घटी कृषि उपज मंडियों की आय

भोपाल। संवाददाता

प्रदेश सरकार द्वारा दी गई सहुलियतों, कई बार शुल्क दर में कमी करने के बाद भी प्रदेश की आधे से अधिक मंडियां घाटे में चल रही हैं। वर्तमान में प्रदेश की मंडियों से होने वाली आय 14 फीसदी तक घटी है। इसकी वजह कोरोना संक्रमण और प्राकृतिक आपदा माना जा रहा है। कोरोना संक्रमण के कारण मंडियां काफी समय बंद रही। वहीं मंडी फीस की दर 6 अक्टूबर 2018 से दो रुपए से घटाकर 1.50 रुपए हुई। वहीं 14 नवम्बर 2020 से 14 फरवरी 2021 तक शुल्क और घटाकर पचास पैसा कर दिया गया। वहीं मांग एवं आपूर्ति के आधार पर कृषि उपज मूल्य में परिवर्तन भी एक वजह है। कोरोना के कारण राज्य सरकार के वित्तीय प्रबंधन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। मुख्यतौर पर कृषि के क्षेत्र में कोरोना के साथ प्राकृतिक आपदा के कारण उत्पादन प्रभावित हुआ है। इससे मंडियों में आवक और आय में कमी आई है।

तीन कृषि कानून लाने से बड़ा अंतर

सरकार द्वारा पिछले दिनों कई बार शुल्क दर में कमी करने से भी राजस्व प्राप्ति में गिरावट आई। केन्द्र सरकार द्वारा तीन कृषि कानून लाने से भी अंतर पड़ा। प्रदेश में भोपाल, इंदौर, कुक्षी, गंधवानी, थांदला, झाबुआ, अलिराजपुर, खरगोन, सनावद, बड़वानी, खंडवा, दतिया, भिंड, सागर, छतरपुर, टीकमगढ़, निवाड़ी, जबलपुर, उमरिया आदि मंडियों को ज्यादा घाटा हुआ है।

सौदा पत्रक ऐप लॉन्च किया

मंडी परिसर के बाहर लेनदेन को पकड़ने के लिए सौदा पत्रक ऐप लॉन्च किया गया है। अब किसान अपनी उपज को अपने खेत या घर से भी बेच सकेंगे। मंडी फीस डायवर्जन के मामलों पर नजर रखने के लिए उड़नदस्ते सक्रिय हैं। मंडी बोर्ड एआईएफ के माध्यम से कृषि पर जोर दे रहा है। बुनियादी ढांचे में निवेश करने जा रहा है ताकि किसानों को उनकी गुणवत्ता और विविधता के अनुसार अपनी उपज बेचने के बेहतर विकल्प मिल सकें। कृषि उत्पादन के आंकड़ों के आधार पर मंडी शुल्क का लक्ष्य तय होगा। देश में मप्र का एक्सपोर्ट शेयर बढ़ाने के लिए मंडी बोर्ड में एक्सपोर्ट सेल की स्थापना की गई है।

ए श्रेणी की आय प्रभावित

राज्य शासन का खजाना भरने में आगे मप्र राज्य कृषि विपणन संघ (मंडी बोर्ड) पिछले तीन साल से कमाई में पिछड़ने लगा है। औसत तौर पर 259 मंडियों में डेढ़ सौ मंडिया घाटे में चली गई हैं। ज्यादातर ए श्रेणी की मंडियों में आय प्रभावित हुई है, जबकि चतुर्थ श्रेणी के कई मंडियों ने रिकॉर्डतोड़ आय बढ़ाई है। बालाघाट जिले की खैरलांजी मंडी 93 प्रतिशत आय के घाटे को पूरा करते हुए वर्ष 2020-21 में 837 प्रतिशत से अधिक आय बढ़ाई है।

कोरोना और प्राकृतिक आपदा के साथ शुल्क में परिवर्तन होने से मंडियों की आय में प्रभाव पड़ा है, लेकिन किसी भी मंडी को बंद नहीं किया गया। तीन साल में अधिकांश मंडियां फायदे पर भी रही हैं, लेकिन अब हर मंडी को लाभ में बनाए रखने के लिए प्लान तैयार किया गया है।

विकास नरवाल, प्रबंध संचालक, मंडी बोर्ड, मप्र

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पता:- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)